B.Ed 1st Year

Unit-V

Teacher as an agent of change
परिवर्तन अभिकर्ता के रूप में शिक्षक

- परिवर्तन की अवधारणा :- परिवर्तन एक अनिवार्य तथा सतत चलने वाली प्रक्रिया है। यदि परिवर्तन नहीं होगा तो जीवन और सृष्टि की गति अवरुद्ध हो जायेगी। परिवर्तन से तात्पर्य है - समाज की रचनाओं, संगठन, स्वरूप, सम्बन्धों तथा परम्पराओं को नई अवस्था प्राप्त होना। परिवर्तन की अवधारणा से तात्पर्य है - प्रत्येक क्षेत्र में नित्य व सतत रूप से चलने वाली प्रक्रिया जो उद्देश्यपूर्ण अथवा निरुद्देश्य ही भौतिक, अभौतिक कारणों के द्वारा मनुष्य के व्यवहार में संशोधन कर सामाजिक ढाचे, जीवन जीने की शैली, विचार करने की पद्धति में संशोधन कर पुरानी परम्पराओं को नई अवस्था प्रदान करना है। यह वैविध्यपूर्ण और जटिल प्रक्रिया है।

- परिवर्तन के प्रकार - परिवर्तन प्रायः सभी क्षेत्रों में देखा जाता है। यदि किसी क्षेत्र में परिवर्तन न हो तो सांस्कृतिक विलम्बता उत्पन्न हो जाती है। परिवर्तन के निम्न प्रकार हैं।

(1) सामाजिक परिवर्तन :- गिलिन एवं गिलिन के शब्दों में "सामाजिक परिवर्तन जीवन की मानी हुई रीतियों में होने वाले परिवर्तन कहते हैं। चाहे ये

Scanned with CamScanner

ये परिवर्तन भौगोलिक दशाओं के परिवर्तन से हुए हो अथवा सांस्कृतिक साधनों के अथवा जनसंरचना की रचना या सिद्धान्तो के परिवर्तन से अथवा, प्रसार से अथवा समूह के अन्दर ही आविष्कारो के फलस्वरूप हुए हो।"

मैकाइवर तथा पेज के अनुसार - "सामाजिक संरचना अथवा सामाजिक ढाँचे मे होने वाले परिवर्तन को ही सामाजिक परिवर्तन कहते हैं।"

सामाजिक परिवर्तन को सामाजिक प्रक्रिया, सामाजिक विकास, सामाजिक वृद्धि सामाजिक क्रान्ति, सामाजिक सुधार, सामायोजन, आधुनिकीकरण तथा चक्रात्मक परिवर्तन के नाम से भी जाना जाता है। सामाजिक परिवर्तन जीवन की रीति, कार्यो मे विचार मे, तथा सामाजिक रचना या समाज के आकार मे होने वाला परिवर्तन आता है।

Scanned with CamScanner